''वैदिक साहित्य में धार्मिक, आर्थिक एवं स्वतंत्रता का अधिकार''

* रोशन सिंह

वेद सम्पूर्ण जगत् ज्ञान के निधि हैं। वेद इस संसार में जीवनोपयोगी समस्त व्यावहारों के आदि स्रोत हैं। वेद पवित्र ज्ञान राशि का अक्षय भण्डार है। हमारी संस्कृति और सभ्यता के मूल स्रोत हैं।

वेद ऐसी ज्ञान निधि हैं जो हमें साक्षात ब्रह्म से प्राप्त है। महर्षि बादरायण व्यास ने अपने सूत्र में ब्रह्म को वेद का कारण बतलाया है–

'शास्त्रयोनित्वात्'[1]

महर्षि दयानन्द ने भी वेदों की उत्पत्ति का समय सृष्टि काल से ही माना है। वेद मानव जीवन को उचित रूप से जीने के लिये प्रकृति प्रदत्त उपहार है।

मानव जीवन–यापन के लिए सहायक प्रत्येक पहलू को वेदों में उजागर किया गया है और वेदों में मानव कर्त्तव्यों एवम् अधिकारों का विशद् वर्णन प्राप्त होता है। अधिकार एवं कर्त्तव्य एक वस्तु के दो रूप हैं।

वैदिक वाङ्मय में शैक्षिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक, सामाजिक, स्वतन्त्रता और चारित्रिक आदि विभिन्न अधिकारों का विशद् विवेचन प्राप्त होता है, जिनमें से कुछ प्रमुख अधिकारों का वर्णन किया जा रहा है।

धार्मिक अधिकार–

धार्मिक दृष्टि से वेद भारत में सर्वोपरि हैं। आचार्य मनु ने वेदों को सभी धर्मों का मूल कहा है–

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'[2]

मनुष्य का दायित्व या कर्त्तव्य पालन ही मानव का सर्वप्रथम धर्म है। वेद सभी विद्याओं के स्रोत हैं तथा मानवमात्र के कर्त्तव्य ज्ञान के लिए आचार्य मनु वेदों को ही आधार मानते हैं–

---

* शोध छात्र, संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

यः कश्चित् कश्यचिद् धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे, सर्वज्ञानमयो हि सः।।[3]

यजुर्वेद में कहा गया है कि वेद पढ़ने का अधिकार सभी मनुष्यों को है। वेद की कल्याणकारी वाणी मानव मात्र के लिये ही दी गई है। चाहे वह ब्राह्मण–क्षत्रिय–वैश्य–शूद्र हो या अतिशूद्र कोई भी हो, वह पवित्र गंगाजल के तुल्य है। जो भी वेद का अध्ययन कर जहाँ भी रहेगा, वहाँ स्वयं शुद्धि रहेगी तथा दूसरों की पवित्रता प्राप्त होगी–

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च, स्वाय चारणाय च।।[4]

वेदों में जहाँ तेजस्विता, अभ्युदय और श्री वृद्धि की कामना की गई है, वहाँ बिना किसी भेद के चारों वर्णों का उल्लेख है–

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु, रुचं राजसु नमस्कृधि।
रुचं विश्येषु, शूद्रेषु, मयि धेहि रुचा रुचम्।।[5]

ऋग्वेद में वर्णन प्राप्त होता है कि उस समय स्त्रियों को यज्ञ करने का अधिकार प्रदान किया गया था, स्त्रियों को यज्ञोपवीत पहनना, वेदमन्त्रों का पाठ करना, वेदाध्ययन करना और प्रवचन का भी अधिकार था–

या दम्पती समनसा, सुनुत आ च धावतः।[6]
पुराकल्पे तु नारीणां मौजी–बन्ध्नमिष्यते।
अध्यापनं च वेदानां सावित्रीवाचनं तथा।।[7]

आर्थिक अधिकार–

मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता है अर्थ (धन) इसलिये वेदों में प्रत्येक मनुष्य को आर्थिक अधिकार प्रदान किया गया है। अर्थ का शाब्दिक अर्थ धन है। जीवन को सही ढंग से चलाने के लिये तथा उसकी प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति के लिये धन आवश्यक है। परिवार का भरण–पोषण हो या भौतिक सुख अर्जित करने की इच्छा दोनों स्थिति में धन आवश्यक है। यजुर्वेद में प्रत्येक व्यक्ति को धन अर्जित करने तथा संग्रह का अधिकार दिया गया है। धन संग्रह और धन की सुरक्षा के लिये योग शब्द आया है।

यजुर्वेद में कहा गया है कि हम धन के स्वामी हों और हमें योगक्षेम प्राप्त हो–

(क) वयं स्वाय पतयो रयीणाम्।[8]

(ख) योगक्षेमो नः कल्पताम्।[9]

धनोपार्जन के अधिकार के साथ गलत साधनों से कमाये गये धन को वेदों में उचित नहीं माना गया है। इस दृष्टि से कि कहीं हम धन प्राप्ति की लगन में कुमार्ग से धन कमाने में प्रवृत न हो जाए ऋग्वेद के एक मन्त्र में वर्णन किया गया है–

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्, विश्वानि देव वयुनानि विद्वान।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेणा, भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।[10]

वेदों में ईमानदारी से धन कमाने पर अधिक बल दिया गया है। वर्तमान में धन कमाने के माध्यमों की पवित्रता का तो परित्याग ही कर दिया गया है। इस पर कोई भी ध्यान नही देता कि पवित्र साधन से उत्तम फल प्राप्त होता है। इसी कारण प्रस्तुत मन्त्र में वेद हमें उपदेश देते हैं कि सतत् सतर्क रहकर आत्म निरीक्षण करते रहना चाहिये जिससे पाप की लक्ष्मी पास न आ जाये–

एता एना व्याकरं खिले गा विष्ठिता इव।
रमन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम्।।[11]

अर्थात् जैसे कोई अपनी गौशाला में आई हुई गौओं की जाँच करता है कि यह मेरी है या नहीं, उसी प्रकार मैं अपने पास आई हुई लक्ष्मी का निरीक्षण करता हूँ जो पुण्य की लक्ष्मी है उसे मैं पास रहने देता हूँ और जो पाप–युक्त लक्ष्मी है, उसे हटा देता हूँ।

अत एव इसमें साध्य और साधन की एकरूपता का निर्देश है तथा प्रार्थना की गई है कि हमें नैतिकता पर आधारित साधन द्वारा धन प्राप्ति करने के लिए प्रेरित कीजिये। वेद का भी उपदेश है–

माहं राजन्नन्यकृतेन भोजम्।[12]

समुचित अर्थव्यवस्था के लिये एक महत्त्वपूर्ण मन्त्र दिया गया है कि हम समाज को दें और समाज से लें। लेन–देन से ही समाज चलता है। हम

मूल्य से वस्तु लें और मूल्य से वस्तु दें–

(क) देही मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे।
निहारं च हरासि मे निहारं नि हाराणि ते।।[13]

(ख) वस्नेव विक्रीणावहै।[14]

ऋग्वेद में केवल अपने देश में ही नहीं, अपितु समुद्र पार अन्य देशों से भी व्यापार से धन एकत्र करने का अधिकार मनुष्य को दिया गया है–

(क) समुद्रस्य चिद् धनयन्त पारे।[15]

(ख) समुद्रे न श्रवस्यवः।[16]

अथर्ववेद के एक मन्त्र से भ्रष्टाचार के विरुद्ध चेतावनी भी दी गई है कि अनुचित साधनों या भ्रष्टाचार से प्राप्त लक्ष्मी मनुष्य को इसी प्रकार नष्ट कर देती है जिस प्रकार आकाश बेल वृक्ष को। अतः उचित साधनों से प्राप्त शुभ लक्ष्मी को अपनावे और भ्रष्ट साधनों से प्राप्त अशुभ लक्ष्मी का त्याग कर दें।

(क) या मा लक्ष्मीः पतयालूरजुष्टाऽभीचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम्।
अन्यस्मात् सवितस्तामितो धाः।।[17]

(ख) रमन्तां पुण्या लक्ष्मीः, याः पापीस्ता अनीनशम्।[18]

स्वतन्त्रता का अधिकार–

स्वतन्त्रता मानव–जीवन का सर्वप्रथम अधिकार है, इसलिए वेदों में स्वाधीनता को राष्ट्रीय अधिकार बताया गया है। ऋग्वेद के (1/80) सोलह मन्त्रों में स्वराज्य की स्तुति की गई है। यजुर्वेद में राष्ट्र को स्वतन्त्र रखने का अधिकार दिया गया है–

स्वराज स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रम् अमुष्मै दत्त।[19]

जहाँ मनुष्य को स्वतन्त्र स्वराज्य में रहने का अधिकार है तो उस स्वतन्त्रता को स्थिर और मजबूत रखना भी अति आवश्यक है। ऋग्वेद में कहा गया है कि आन्दोलन से ही स्वतन्त्र राज्य की प्राप्ति होती है तथा स्वतन्त्र राज्य में ही सब प्रकार की उन्नति और विकास होता है। पराधीन

रहकर नहीं। इसलिये देश में जो अपराधी, पापी और भ्रष्टाचारी जन हैं, तुम उनको अधिकार पूर्वक, बलपूर्वक नष्ट करो, उनके लिये कटु और कठोर उपाय करना पड़े तो उनको भी करो। किसी भी देवता या किसी भी महान शक्ति को हमारे राष्ट्र की स्वतन्त्रता को बाधित करने का अधिकार नहीं है–

(क) अर्चन अनु स्वराज्यम्।[20]

(ख) अस्य हि स्वयशस्तंर, सवितुः कच्चन प्रियम्।
न मिनन्ति स्वराज्यम्।[21]

अथर्ववेद के एक अन्य मन्त्र में स्वतन्त्रता की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा गया है कि स्वतन्त्र स्वराज्य से सुख–सम्पत्ति मिलती है और विकास होता है इस विकास के लिये ही स्वराज्य की कामना की गई है–

वस्वीरनु स्वराज्यम्।[22]

इसी मन्त्र के द्वारा सामवेद् में राष्ट्र की समृद्धि की कामना की गई है–

वस्वीरनु स्वराज्यम्।[23]

ऋग्वेद की एक ऋचा में स्वराज्य की महत्ता का विशद वर्णन किया गया है। ऋग्वेद का कथन है कि सामूहिक प्रयत्न से ही स्वराज्य प्राप्त होता है। स्वराज्य का क्षेत्र व्यापक है, यह बहुतों के प्रयत्न से मिलता है। स्वराज्य को सम्भाल कर रखना एक व्यक्ति का नहीं, अपितु सबका कर्त्तव्य है। इसके लिये एक महत्त्वपूर्ण शब्द **बहुपाय्ये** दिया गया है। इसका अर्थ है कि इसकी सुरक्षा के लिये निःस्वार्थ बहुत लोगों का प्रयत्न वाञ्छनीय है। **'व्यचिष्ठे'** शब्द भी बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इसका अभिप्राय यह है कि स्वतन्त्रता का अभिप्राय बहुत व्यापक है, इसमें न केवल स्वतन्त्रता ही आती है अपितु आर्थिक विकास, सामाजिक उन्नति, वैयक्तिक उन्नति और सबको सुख–शान्तिमय जीवन बिताने का अवसर प्राप्त होता है–

व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये।[24]

यजुर्वेद में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि राष्ट्र में एक महान जनतान्त्रिक राज्य की स्थापना की जानी चाहिये, जिससे जनता

को अपना अधिकार प्राप्त हो सके–

महते क्षत्राय, महते जानराज्याय।[25]

अथर्ववेद में प्रजा को अधिकार दिया गया है कि वह अपना राजा चुनें। जहाँ प्रजा को राजा चुनने का अधिकार दिया गया है वहीं प्रजा के कर्त्तव्यों के भी निर्देश है कि वह राष्ट्र को माता के तुल्य पूज्य समझें, सदा जागरुक रहें और देश रक्षार्थ बलिदान होने के लिये तत्पर रहें–

(क) त्वां विशो वृणतां राज्याय।[26]

(ख) माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।[27]

(ग) वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।[28]

(ख) वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।[29]

इस प्रकार हमें वेदों में मानव अधिकारों से सम्बन्धित पर्याप्त सामग्री प्राप्त होती है। आज समाज को अपने अधिकारों के प्रति सजग रहना और अपने कर्त्तव्य पालन के प्रति भी जागरुक रहना आवश्यक है, क्योंकि हमारे द्वारा निभाई गयी कर्त्तव्यनिष्ठा ही दूसरे का अधिकार है, और दूसरे के अधिकारों को सुरक्षित रखना ही हमारा दायित्त्व है।

सन्दर्भ–

1. ब्रह्मसूत्र
2. मनुस्मृति, 2/6
3. मनुस्मृति, 2/7
4. यजुर्वेद, 26.2
5. वही, 18.48
6. ऋग्वेद, 8.31.5
7. मनुस्मृति, 30
8. यजुर्वेद, 10.20
9. वही, 22.22
10. ऋग्वेद, 1.189.1
11. अथर्ववेद, 7.115.4

12. ऋग्वेद, 2.28.9
13. यजुर्वेद, 3.50
14. वही, 3.49
15. ऋग्वेद, 1.167.2
16. वही, 1.48.3
17. अथर्ववेद, 7.115.2
18. वही, 7.115.5
19. यजुर्वेद, 10.4
20. ऋग्वेद, 1.80.1
21. वही, 5.82.2
22. अथर्ववेद, 20.109.2
23. सामवेद, 1006
24. ऋग्वेद, 5.66.6
25. यजुर्वेद, 9.40
26. अथर्ववेद, 3.4.2
27. वही, 12.1.12
28. वही, 12.1.62
29. यजुर्वेद, 9.23